

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म. प्र.)



सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला पीएचडी कोर्स वर्क

2017-18

सामूहिक सामाजिक कार्य प्रतिवेदन विषय - इतिहास

निर्देशक -

डॉ. रेखा आचार्य

विभागाध्यक्ष,

सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म. प्र.)

प्रस्तुतकर्ता -

- देवेन्द्र परमार
- अर्थव्व तिवारी
- दुष्यंत यादव
- स्वप्निल जैन
- विष्णु यादव



सामाजिक कार्य का क्षेत्र एवं विषय

राजवाड़ा के जीर्णोद्धार में कार्यरत् श्रमिकों की स्थिति का अध्ययन व अवलोकन।

सामाजिक कार्य का उद्देश्य

- 1) राजवाड़ा स्थित ऐतिहासिक इमारतों का अवलोकन करना।
- 2) राजवाड़ा के जीर्णोद्धार में कार्यरत् श्रमिकों के कार्यों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना।
- 3) यहां कार्यरत् श्रमिकों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित आंकड़े जुटाना।
- 4) श्रमिकों को प्राप्त हो रही सुविधाओं एवं वेतनभत्ते आदि की जानकारी प्राप्त करना।
- 5) यहां कार्यरत् श्रमिकों की समस्याओं एवं परेशानियों का अवलोकन करना।
- 6) श्रमिकों को उनके अधिकारों एवं ऐतिहासिक इमारतों के महत्व की जानकारी देना।



सामाजिक कार्य का विवरण

- स्थान** - राजवाड़ा चौराहा, होल्कर कपड़ा बाजार के पास, इन्दौर (म. प्र.)
पिन कोड - 452002
- सहभागी** - देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के पीएचडी कोर्स वर्क, 2017-18 के इतिहास विषय के शोधार्थी -
- 1) देवेन्द्र परमार
 - 2) अर्थर्व तिवारी
 - 3) दुष्यन्त यादव
 - 4) स्वप्निल जैन
 - 5) विष्णु यादव



- कार्यकलाप**
- शोधार्थियों ने राजवाड़ा, इन्दौर स्थित होलकर राजवंश से सम्बन्धित भवनों, इमारतों एवं मंदिरों का अवलोकन किया।
 - शोधार्थियों ने यह पाया कि यहां स्थित ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों के जीर्णोद्धार का कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग एवं नगर निगम इंदौर के निर्देशन में KNOSPE & Co. LLP, New Delhi के द्वारा किया जा रहा है।
 - सम्बन्धित कम्पनी के एडमिनिस्ट्रेटर श्री सुमित कुमार से हुई वार्ता के दौरान जानकारी प्राप्त हुई कि जीर्णोद्धार के इस कार्य की अवधि लगभग 2 वर्ष निश्चित की गई है। इस कार्य हेतु अनुभवी व योग्य इंजीनियर एवं लगभग 30 श्रमिक कार्यरत् हैं।
 - जीर्णोद्धार कार्य में लगे लगभग सभी श्रमिक पुरुष एवं वयस्क हैं। अधिकांश श्रमिक बिहार, उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित हैं।
 - श्रमिकों की कार्यावधि सुबह 10:00 बजे से सायं 05:00 बजे तक निश्चित की गई है। हालांकि कार्यावधि को विशेष परिस्थिति में सायं 07:00 बजे तक बढ़ाया भी जा सकता है।
 - श्रमिकों को भुगतान दैनिक कार्य के आधार पर किया जाता है।
 - श्रमिकों को नियमित अन्तराल में अवकाश भी दिया जाता है। अवकाश के दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि 30 श्रमिकों में कम-से-कम 20 श्रमिक कार्य स्थल पर उपस्थित रहें।
 - श्रमिकों के रहने, सोने, खाने-पीने, स्नान करने आदि की सुविधा भी राजवाड़ा के अन्दर ही की गई है।

- शोधार्थियों ने श्रमिकों से हुई चर्चा के दौरान यह पाया कि उन्होंने पूर्व में भी ऐतिहासिक महत्व से सम्बन्धित इमारतों के जीर्णोद्धार का कार्य किया है तथा इस सम्बन्ध में ध्यान में रखी जाने वाली आवश्यक बातों का उन्हें पूर्ण ज्ञान है।
- श्रमिकों ने बताया कि हमें यहां कार्य करने में कोई समस्या एवं परेशानी नहीं है।
- शोधार्थियों ने अवलोकन के दौरान पाया कि सभी श्रमिक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ हैं तथा अपना कार्य कुशलतापूर्वक कर रहे हैं।
- शोधार्थियों ने अपनी सामाजिक भूमिका को समझते हुए श्रमिकों में कुछ खाद्य सामग्री, जैसे - बिस्किट व चिप्स तथा स्वच्छ पेयजल भी वितरित किया।
- शोधार्थियों ने श्रमिकों को उनके अधिकारों की जानकारी दी तथा कार्य स्थल पर किसी भी आकस्मिक दुर्घटना की स्थिति में हेल्पलाइन नम्बर भी उपलब्ध कराए।



निष्कर्ष

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म. प्र.) के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के इतिहास विषय के शोधार्थियों द्वारा राजवाड़ के जीर्णोद्धार हेतु कार्यरत् श्रमिकों की स्थिति के अवलोकन की स्थिति के दौरान यह पाया गया कि यद्यपि श्रमिक धूल भरे माहौल व खड़ी दोपहरी में सीमित संसाधनों में कार्य करते हैं, फिर भी उन्हें ऐतिहासिक इमारतों के महत्व का पूर्ण बोध है। अवलोकन के दौरान शोधार्थियों ने यह अनुभव किया कि समाज में आज भी आर्थिक एवं शैक्षणिक विषमता विद्यमान है तथा आज भी समाज का एक वर्ग दो वक्त की रोटी के लिए ही जी-तोड़ मेहनत एवं परिश्रम कर रहा है।









देवि अहिल्या विश्वविद्यालय ,इन्दौर



सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला

पी.एच.-डी. कोर्स वर्क

(2017-18)

सामुहिक सामाजिक कार्य प्रतिवेदन

विषय :- राजनीति विज्ञान

निर्देशन:-

डॉ. रेखा आचार्य.

विभागाध्यक्ष.

सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला.

देवि अहिल्या विश्वविद्यालय.

प्रस्तुतकर्ता:-

अर्जुन चौहान

जितेन्द्र यादव

सरताज़ अहमद वानी

सत्यम् सम्राट आचार्य

कु. श्वेता गांगले

संस्था का अनुमति पत्र (अंतर्राष्ट्रीय मिशनरीज़ ऑफ़ चैरेटी, इन्दौर)

दिनांक - 10/05/2018

स्थान - इन्दौर

प्रति

ज्योति निवास

'निशापित जाग्राम'

ए. बी. रोड. नवलखण्डा

इन्दौर (म.प्र.)

यह प्रमाणित किया जाता है कि, देवी
अहित्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के
अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला
के पी.एच.-डी. शोधाधी (राजनीतिविज्ञान)
बु. इवेना गांगले
सरताज अष्मद बानी
सत्यम् समाट ज्ञान्वार्य
जितेन्द्र यादव
अर्जुन चौधान ने मिशन ऑफ चैरेटी
(मदर टेरेसा) द्वारा संचालित ज्योति
निवास 'निशापित जाग्राम' में दिनांक-
10 मई 2018 को विभिन्न सामाजिक
कार्यों में सहभागिता की।
इनके समर्पण पर संस्था अनुग्रहित है।

स्वीखर स्वास्थ्य मरीआ

MISSIONARIES OF CHARITY
(MOTHER TERESA)

Mission of Poor and Dying Institutes
A.B. Road, Nainital-263001, U.P.

सामाजिक कार्य का क्षेत्र एवं विषय :-

निराश्रित आश्रम में वंचितों, गरीबों, निराश्रितों तथा असहाय लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं दैनिक जीवन मेंउपयोगी सलाह पर परिचर्चा ।

सामाजिक कार्य का उद्देश्य :-

- 1) गरीबों, निराश्रितों एवं असहायों को जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के विभिन्न तरीकों से अवगत करवाना ।
- 2) रोगियों एवं पीड़ितों को स्वास्थ्यवर्धक जानकारियों के बारे में जानकारी देना
- 3) निराश्रितों को दैनिक जीवन में लाभकारी उपयोगी सलाह देना
- 4) आश्रम परिसर में स्वच्छता के प्रति उपस्थित लोगों को जागरूक करना
- 5) निराश्रित आश्रम के सभी सदस्यों में परस्पर विश्वास एवं बन्धुता की भावना को बढ़ाना

सामाजिक कार्य का विवरण :-

स्थान :-

अंतर्राष्ट्रीय मिशनरीज़ ऑफ चैरेटी (मदर टैरेसा) के अंतर्गत संचालित ज्योति निवास 'निराश्रित आश्रम' ,नवलखा, इन्दौर (म. प्र.)

सहभागी:-

देवि अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के अंतर्गत सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के पी. एच. डी. कोर्स वर्क में राजनीति विज्ञान के समस्त शोधार्थी.

- 1) अर्जुन चौहान**
- 2) जितेन्द्र यादव**
- 3) सरताज़ अहमद वानी**
- 4) सत्यम सम्राट आचार्य**
- 5) कु. श्वेता गांगले**

कार्यकलाप:-

- 1) इन्दौर स्थित अंतर्राष्ट्रीय मिशनरीज़ ऑफ चैरेटी द्वारा**

संचालित ज्योति निवास 'निराश्रित आश्रम' जहां लगभग 150 के लगभग गरीब, असहाय और निराश्रितों का सेवा संरक्षण होता है, जो विश्वमूर्ति मदर टैरेसा के महान कार्यों से अनुप्रेरित संस्था है और इन्दौर में पिछले 80 वर्षों से समाज सेवा के इस महनीय कार्य में आहूत है।

2) ज्योति निवास निराश्रित आश्रम में सहभागी शोधार्थियों ने सामाजिक कार्य के पवित्र उद्देश्य से सर्वप्रथम आश्रम के प्रशासन प्रमुख आदरणीय सिस्टर सिसिल मरिया से आधिकारिक अनुमति लेकर आश्रम में उपस्थित निराश्रित जनों को स्वास्थ्य के प्रतीजागरूकता लाने के लिए सम्बोधित किया।

3) स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अंतर्गत शोधार्थी कुंश्वेता गांगले एवं शोधार्थी सरताज़ अहमद वानी ने

उपस्थित आश्रम वासियों को सम्बोधित किया ।

कुं श्वेता गांगले ने जहां उपस्थित जनों को हथेली के एक्युप्रेशर द्वारा विभिन्न प्रकार की बिमारियों के प्रति सचेत किया साथ ही वहीं सरताज अहमद वानी ने आश्रमवासियों के दैनिक चर्या में सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रति मनोवैज्ञानिक रूप से जागरूक किया।

-उपस्थित लोगों को प्राथमिक उपचार के बारे में बतलाया



गया

-उन्हें दैनिक कार्यकलापों में स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने के गुर सिखलाये गए

-अपने शरीर की नियमित देखभाल तथा साफ-सफाई के प्रति जागरूक किया गया

-निराश्रित अवस्था में किसी भी प्रकार की नकारात्कता से बचने के लिए जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने के विभिन्न विचारों से उन्हें अवगत कराया गया ।

-शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करना ।

4) आश्रम में उपस्थित सदस्यों से तथा आश्रम के व्यवस्था नियंत्रकों से शोधार्थी अर्जुन चौहान तथा शोधार्थी जितेन्द्र यादव ने आश्रमवासी निराश्रितों के दैनिन कार्यकलापों एवं दिनचर्या के विषय में जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें उपयोगी सलाह दी

-दैनिक जीवन में स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के बीच सहसम्बन्ध को बतलाना

- परिसर की साफ-सफाई के विषय में उन्हे जागरुक करना
- मौसमी परिवर्तन के साथ आने वाली बिमारियों के प्रति उन्हें सचेत करना
- मलेरिया, डेंगू तथा अन्य जलजनित व्याधियों के प्रति सच्च करना।

5) शोधार्थी सत्यम सम्राट आचार्य ने आश्रम संचालिका सुश्री सिस्टर सिसिल मरिया से आश्रम के संस्थापन तथा सके वित्तीय स्रोतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साथ, आश्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा निराश्रित आश्रम के परिसर में स्वास्थ व्यवस्था के प्रति परिचर्चा की एवं फल वितरित किये।

6) सामाजिक कार्य की पूर्णता के अंत में समस्त आश्रमवासी निराश्रित जनों को शोधार्थियों द्वारा निःशुल्क फल वितरित किए गए।

सामाजिक कार्य का निष्कर्ष :-

देवि अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के अंतर्गत सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के राजनीति विज्ञान के शोधार्थियों

द्वारा मिश्नरीज़ ऑफ चैरेटी के द्वारा संचालित ज्योति निवास निराश्रित आश्रम में अपनी सामाजिक सेवा के अंतर्गत निष्कर्ष के रूप में यह पाया कि निराश्रितों का जीवन जिस दुख और दैन्यता से पीड़ित होता है, इससे उनके मन में जीवन के प्रति एक व्यवहारिक उदासीनता आ जाती है जो बाद में विभिन्न प्रकार की मानसिक बिमारियों तथा शारिरिक व्याधियों के साथ जीवन के प्रति गहरे असंतोष का कारण भी बनती है, ऐसी स्थिती में उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए तथा उनके दैनिक स्तर से स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए उन्हे मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

चित्र संलग्न है.....







SOCIAL WORK FOR PARTIAL FULFILLMENT OF PHD
COURSEWORK 2018



REPORT: THERAPEUTIC SESSION IN A
DE-ADDICTION CENTRE



HAPPY HOME DE-ADDICTION CENTRE

(Run by Smart Future Social Welfare Society)

Opp. S.D.P.S Girls College, Khandwa Road, Indore Mob.: 9630124445, 7415884749

Date: 11-5-2018

To

School of Social Sciences,
Devi Ahilya Vishwavidyalaya,
Indore

This is to certify that research scholars from SOSS (Psychology) conducted a therapeutic session for completion of PhD coursework, at Happy Home Deaddiction Centre on the 11th of May, 2018. The participants were -

Aditi Mehta
Anjali Maurya
Batal Saifee
Deepa Jain
Mangala Vidhate
Menakshi Makkar

Pawan Gole
Raju Choudhary
Ranjeet Ranjan Tiwari
Santosh Relavaniya
Shubhi Vyas
Vani Sharma

**HAPPY HOME
DE-ADDICTION CENTER**
Reg. No.-IND2605/96
KHANDWA ROAD, INDORE

PARTICIPANTS

The following students participated in conducting a therapeutic session at Happy Home De-Addiction Centre on the 11th of May, 2018 as social work for partial fulfillment of PhD Coursework, SOSS, DAVV.

1. Aditi Mehta
2. Anjali Maurya
3. Batul Saifee
4. Dipa Jain
5. Mangala Vidhate
6. Meenakshi Makkar
7. Pavan Gole
8. Raju Chaudhari
9. Ranjeev Ranjan Tiwari
10. Santosh Ralavaniya
11. Shubhi Vyas
12. Vani Sharma

CONTENTS

Introduction.....	2
Setting.....	3
Session Plan.....	4
Session Report.....	5
Conclusion.....	7
Photographs.....	8

INTRODUCTION

The students of PhD Coursework (Psychology) conducted a therapeutic session at Happy Home De-addiction Centre, run by the Smart Future Social Welfare Society on the 11th of May, 2018.

Substance abuse and dependence is spreading worldwide and gripping increasing numbers of young people. Addiction to alcohol, marijuana, cocaine, heroin, etc can make people dysfunctional and destroy families. The biological effects of consuming these substances can be seen across generations. These substances damage the body as well as the mental health of users. They can produce hallucinations, hamper cognitive functioning, impair decision making, damage relationships and take away social support. Individuals often get involved in substance abuse because of peer pressure, experimentation or to take away the edge from stress due to financial troubles, marital problems or just in a bid to "have fun".

It's extremely difficult to wean off psychotropic substances because dependence is accompanied by withdrawal when the substance is not taken or ingested and different kinds of substance can produce different withdrawal symptoms which may be very severe. Withdrawal symptoms can range from headaches to seizures and hallucinations. De-addiction is often a combination of psychotherapy, pharmacotherapy, rehabilitation and strong social support. Attachment to the family and welfare of family members acts as the most powerful motivator for a lot of people.

In order to stay away from the addictive substance it is important for the person to be strongly motivated and inherently so otherwise people can slip back into substance abuse. Thus psychotherapy and counselling can play a very important role in maintaining abstinence.

SETTING

Happy Home De-addiction Centre is a rehabilitation facility for men. They have three counsellors and a strict daily regimen for the addicts in order to limit the possibility of relapse. The staff and counsellors attend to the mental health of the residents. They wake up early in the morning, pray, then take part in a group session designed to motivate them and provide a safe space where they can acknowledge their problems and work on them together. Lunch is followed by activities like basket weaving, small periods of rest, group games and group sharing. The day is structured such that the residents' are always occupied with something or the other. The patients use this space to recover from their addiction, contemplate life, and plan ahead. The patients also have private counselling sessions.

The centre is designed in a way so as to generate positive thinking and is filled with positive messages and posters. It promotes a sense of confidence and positivity for residents to follow their dreams. The staff has been trained to act with sensitivity and concern for the residents. The residents are encouraged to respect and be supportive towards each other. The coordinators also organise sessions by outside experts to create a rich experience for the residents. The programs includes psycho-education and vocational training for the participants.

There are twenty residents in the facility at present from the ages 15 to 65. Most of the residents were addicted to either alcohol or brown sugar, and some were multiple substance abusers.

SESSION PLAN

- ❖ Introduction of students conducting the session.
- ❖ Relaxation Activity
- ❖ Video clip on addiction by Sandeep Maheshwari
- ❖ Discussion on experience of addiction
- ❖ Discussion on positive thinking
- ❖ Interactive session between audience and facilitators
- ❖ Vote of thanks

SESSION REPORT

❖ *Introduction:*

The session began with the introduction of all the students from PhD coursework – Psychology, 2018 by the centre co-ordinator. All the students came forth and introduced themselves and stated the aim of the session.

❖ *Relaxation Activity*

After the introductory session we used relaxation technique focusing on deep breathing. The participants were asked to close their eyes and the facilitator evoked positive imagery as he gently instructed the group to breathe with awareness. This got the group to calm down and tune into the session with full attention. This short relaxation moved the group into positivity.

❖ *Video clip on addiction by Sandeep Maheshwari*

The video was about various forms of addiction and how they take control over one's life. It gave an expansive definition of addiction encompassing excessive sleep, excessive eating, preoccupation with sex, mindless television viewing and psychotropic substances. He suggested that people move towards addictions due to aimlessness and lack of purpose. He dwelled into how lack of control on our day-to-day activities can manifest into addiction and explained the importance of balance in life. He concludes by saying that one's outlook towards life's challenges changes the way behaviour becomes habit. It is important to know what emotions need to be controlled and tolerated and dealt with positively. He repeats the importance of having a goal incessantly and claims that the way to shape your life and leave behind addiction is to have purpose.

❖ *Discussion on experience of addiction*

The video was followed by an interactive session where participants were invited to shape their experiences of addiction, what has helped them to stay motivated and what provides an anchor in this time of struggle. After brief hesitation, the participants willingly shared their struggle with addiction. Many spoke about their families, how they have wronged loved ones and the will

to make amends as a primary motivator in trying to overcome addiction. Many were driven by a better vision for the future and the desire to achieve absolute sobriety. It was found that guilt from their actions was a very important factor towards the road to recovery as it brought realisation that there is a problem. Some of the residents had come to the centre for the second time and one of the participants said that the reason he had relapsed was that he became sober due to change in environment i.e. the first stay at the de-addiction centre, however when he went back to his regular life, he could not abstain as the change in environment had not resulted in a change in him. He realised that in order to stay sober outside he needed to bring a change in himself. Many of the participants agreed to the fact that it was either peer pressure or the sense of enjoyment that got them into the habit of consuming drugs.

All the participants were supportive of each other and acted as a support system to their fellow patients in dealing with their addictions. They motivated each other and were patient with themselves in trying to come clean. They realised that their goals and a brighter and promising future was bigger than their addictions and the struggle was worthwhile.

❖ *Discussion on positive thinking*

The interactive session was followed by a small talk on the concept of positive thinking. It was explained that positive thinking does not mean that only good things will happen but accepting both good and bad outcomes which a positive attitude that would make the individual work with the present so as to work towards the best outcome without expectation from the future.

❖ *Interactive session between audience and facilitators*

This session comprised of performances by the audience as well the facilitators. It acted as a cool down exercise from the more intense sharing, so as to end the session on a positive and high note. Facilitators read out motivational prose and poetry and the students sang a popular film song, about a happy and carefree future, together with the participants to lighten up the atmosphere.

❖ *Vote of thanks*

We concluded with a vote of thanks for the eager reception and cooperative arrangement for our session. We presented a plant to the organisation as a token of gratitude.

CONCLUSION

The session at Happy Home De-addiction Centre proved to be a fruitful and satisfying experience for all of us. It was a valuable experience for us as many of us have not worked with addiction before and this session and experiences of the residents provided insight and an emotional and empathic connect with the addicts and their struggle.

Even as facilitators it gave us positivity and confidence in the process of de-addiction. It gave us familiarity with the process of group therapy and the importance of creating a safe and supportive environment of fellow sufferers.

The session concluded on a happy note.

PHOTOGRAPHS



Devi Ahilya Vishwavidhyalaya, Indore(M.P.)



School of Social Sciences

Ph.D. Course Work

Session 2017-18

Social Service Activity Report(Group Report)

Subject-Social Work

Submitted to-

School of Social Sciences
Department ,DAVV

Submitted by -

Seema Shotriya
Richi Simon

Gaurav Dhakad

Dhansingh

Devendra Singh Rathore

Harshita Vijayvargiya

Sachin Patidar

समाज सेवा गतिविधि का प्रतिवेदन



Social Service Activity by Ph.D Scholars (Social Work), SOSS DAVV

10/05/2018

विषय - मलिन बस्ती में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम एवं उनकी समस्या का निराकरण

उद्देश्य -

१. इंदौर की मलीन बस्तियों में स्वच्छता की स्थिति को जानना।

२. स्वच्छता संबंधित जागरूकता कार्य करना।

कार्यस्थल का नाम - प्रोफेसर कॉलोनी मालिन बस्ती जोन क्रमांक 13 वार्ड क्रमांक 74 इंदौर

प्रतिभागियों के नाम-

१. सीमा शोत्रिय

२. रिची सायमन

३. गौरव धाकड़

४. धनसिंह

५. हर्षिता विजयवर्गीय

६. देवेंद्र सिंह राठौर

७. सचिन पाटीदार

किये गए कार्य का विवरण -

१. स्वच्छता संबंधित गतिविधियों की जानकारी के लिए बस्ती के रहवासियों को एकत्रित किया गया।



2. जोन क्रमांक 13 वार्ड क्रमांक 74 स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत प्रोफेसर कॉलोनी रहवासियों से जानकारी ली गई कि आपके यहां डोर टू डोर कचरा वाहन नियमित रूप से आ रहा है या नहीं सड़क की साफ-सफाई हो रही है या नहीं एवं आपके द्वारा कचरे का पृथक्करण एवं दो डस्टबिन का उपयोग गीला एवं सूखा कचरा अलग अलग रखा जा रहा है या नहीं इत्यादि जानकारी रहवासियों से ली गई। रहवासियों को गीले एवं सूखे कचरे के प्रबंधन की जानकारी देकर, उन्हें अलग-अलग दो डस्टबिन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।



3. रहवासियों से स्वच्छता एप 311 के बारे में चर्चा कर जानकारी दी गई और इसके उपरांत उन्हें स्वच्छता एप को स्वच्छ भारत मिशन के समन्वयक देवेंद्र सिंह राठौर के द्वारा स्वच्छता एप 311 के बारे में बताया गया और गौरव धाकड़ के द्वारा स्वच्छता एप को मोबाइल में इंस्टॉल कर एवं उसका उपयोग किस प्रकार करना है, की जानकारी दी गई एवं एप्लीकेशन 311 के बारे में बताया गया जिसके अंतर्गत गंदगी से संबंधित कोई भी समस्या का समाधान 24 घंटे के अंतर्गत किया जाता है।



4. सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा रहवासियों को गंदगी से संबंधित समस्याओं और स्वच्छता को बनाए रखने वाले मुद्दों पर चर्चा की गई। रहवासियों कि पानी संबंधित समस्याओं से भी अवगत हुए, एवं पानी कि स्वच्छता व संरक्षण हेतु सुझाव भी दिए गये।



5. बस्ती के बच्चों में स्वच्छता संबंधी जागरूकता बढ़ाने के लिए अनौपचारिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन कर उन्हें स्वच्छता के लिए प्रोत्साहित किया गया जिससे वह अपने घरों के आसपास होने वाली गंदगी को फैलने से रोके और बस्ती को साफ एवं स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दें।



5. स्थानीय बस्ती में स्वच्छता चर्चा के द्वारा घर में शौचालय संबंधित जानकारी दी गई और खुले में शौच करने के दुष्परिणामों पर चर्चा की गई। रहवासियों से चर्चा के दोरान पाया गया कि स्थानीय लोगों की जनभागीदारी के द्वारा अस्थाई नाली एवं बंद नाली का निर्माण किया गया



निष्कर्ष - उपरोक्त किए गए कार्यों के माध्यम से देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान अध्ययन शाला के पीएचडी कोर्स वर्क (समाज कार्य) विषय के शोधार्थी के सामूहिक प्रयास के द्वारा प्रोफेसर कॉलोनी की मालिन बस्ती में रहवासियों से विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से स्वच्छता में आने वाली समस्याओं के बारे में जानकारी ली गई तथा चर्चा के माध्यम से रहवासियों को उपयोगी जानकारी दी गई और स्वच्छता जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। रहवासियों के द्वारा बस्ती में गंदे पानी का निष्कासन एवं कचरा गाड़ी के बस्ती तक नहीं पहुंचने और स्वच्छता कर्मियों के असहयोग जैसी समस्याओं बारे में जानकारी ली गई। समाज कार्य विषय के सभी शोधार्थी अध्ययनशाला द्वारा ज्ञापित इस समाज कार्य गतिविधि संबंधी रचनात्मक पहल से अपने व्यवहारिक अनुभव को प्राप्त किया गया।

धन्यवाद।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर



समाज विज्ञान अध्ययनशाला

पी.एच.-डी. कोर्स वर्क

(विषय - समाजशास्त्र)

सत्र: 2017-18

सामाजिक सेवा गतिविधि प्रतिवेदन

“वित्तीय साकृता जागरूकता कार्यक्रम”

निर्देशन

प्रो. ऐखा आचार्य

विभागाध्यक्ष,

समाज विज्ञान अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

प्रस्तुतकर्ता

पी.एच.-डी. कोर्सवर्क(2017-18)

समाजशास्त्र विषय के समस्त

शोधार्थीगण

सामाजिक सेवा कार्य का संक्षिप्त परिचय -

10 मई 2018 को समाज विज्ञान अध्ययनशाला (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्डौर) के समाजशास्त्र विषय के पीएच-डी. शोधार्थीयों द्वारा सामाजिक सेवा गतिविधि अंतर्गत इन्डौर शहर के लालबाग क्षेत्र स्थित गंदी बस्ती अर्जुनसिंहपुरा में ‘वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम’ का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में गंदी बस्ती निवासियों को, प्रधानमंत्री जन धन योजना अंतर्गत दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी, बचत का महत्व, वित्तीय साक्षरता, जीवन बीमा सुविधा, रुपे कार्ड इत्यादि जानकारियाँ प्रदान की गई। साथ ही जलरतमंद महिलाओं और बच्चों को दाल-चावल का वितरण भी किया गया।

सामाजिक सेवा गतिविधि का विषय- “वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम”

कार्यस्थल का नाम एवं संक्षिप्त परिचय - अर्जुनसिंहपुरा, जो कि लालबाग के सामने स्थित एक गंदी बस्ती है, को सामाजिक सेवा गतिविधि के संपादन हेतु चुना गया। यह बस्ती देवी अहिल्या विश्वविद्यालय तक्षशिला परिसर से लगभग 5 किमी. की दूरी पर महूनाका रोड़ पर स्थित है। इस बस्ती में प्राप्त प्राथमिक जानकारी अनुसार 144 परिवार निवासरत हैं, जो कि दिहाड़ी मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते हैं।

सामाजिक सेवा गतिविधि के उद्देश्य -

1. मिलिन बस्ती की महिलाओं को वित्तीय साक्षरता से अवगत करवाना।
2. महिलाएं वित्तीय समावेशन से जुड़ी हैं या नहीं अर्थात् उनका बैंक में खाता है या नहीं यह ज्ञात करना।
3. बचत के महत्व को समझाना।
4. अर्जुनसिंहपुरा बस्ती की महिलाओं को प्रधानमंत्री जन धन योजना अंतर्गत प्राप्त होने वाली सुविधाओं से अवगत करवाना।
5. जलरतमंद महिलाओं एवं बच्चों को दाल चावल का वितरण।

कार्यक्रम के लाभार्थीगण - बस्ती में निवासरत महिलाएं एवं बच्चे।

प्रतिभागियों का विवरण - उक्त गतिविधि में पीएच-डी. कोर्स वर्क (समाजशास्त्र) के 22 शोधार्थियों ने सहभागिता दी, जिनकी अनुक्रमांक सह हस्ताक्षरित सूची प्रतिवेदन के अंत में संलग्न है।

कार्यक्रम दौरान की गई गतिविधियाँ -



- ❖ सर्वप्रथम शोधार्थियों द्वारा मलिन बस्ती अर्जुनसिंहपुरा की महिलाओं को एकत्रित किया गया। प्राथमिक जानकारी के बाद यह भी बताया कि वे प्रधानमंत्री जन धन योजना अंतर्गत जीरो बेलेंस अकाउण्ट खुलवा सकते हैं।



- ❖ महिलाओं से प्राथमिक जानकारी ग्रहण करने के बाद वित्तीय साक्षरता से जुड़ी उपरोक्त जानकारियाँ उन्हें प्रदान की गईं।



महिलाओं से जानकारियों का आदान-प्रदान करते शोधार्थी



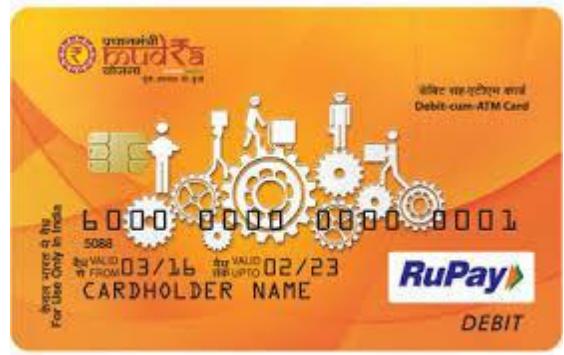
❖ महिलाओं को जानकारी दी गई कि प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत खाताधारकों को 30 हजार रुपये की व्यूनतम राशि का जीवन बीमा दिये जाने का प्रावधान है, इसके साथ ही 1 लाख का एक्सीडेंट बीमा भी दिया जाएगा।



❖ गरीबों को विपत्ति के समय साहूकारों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे उनका शोषण होता है। महिलाओं को बताया गया कि प्रधानमंत्री जन धन योजना के अंतर्गत खाताधारी 6माह के अंतराल में 5000रुपये तक की राशि ऋण के तौर पर सीधे बैंक से ले सकता है।



❖ महिलाओं को यह जानकारी भी दी गई कि अन्य एटीएम कार्ड की तरह ही प्रधानमंत्री जन धन योजना के खाताधारकों को रूपे कार्ड की सुविधा दी जा रही है। बैंक खाता खुलवाकर इसका लाभ ले सकते हैं।



❖ बचत क्यों आवश्यक है? बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ने के वर्तमान में क्या लाभ हैं? इत्यादि बिंदुओं पर भी शोधार्थियों द्वारा चर्चा की गई तथा रहवासियों की वित्तीय साक्षरता संबंधी जिज्ञासाओं को शांत करने का प्रयास भी किया गया।



वित्तीय साक्षरता जागरूकता के अलावा जखरतमंद महिलाओं एवं बच्चों को शोधार्थियों द्वारा दाल चावल का वितरण भी किया गया



जरुरतमंद बच्चों को वावल वितरित करते शोधार्थी

किये गये कार्य की अन्य छलकियां -



महिलाओं को बैंक अकाउण्ट खोलने संबंधी जानकारी देती शोधार्थी



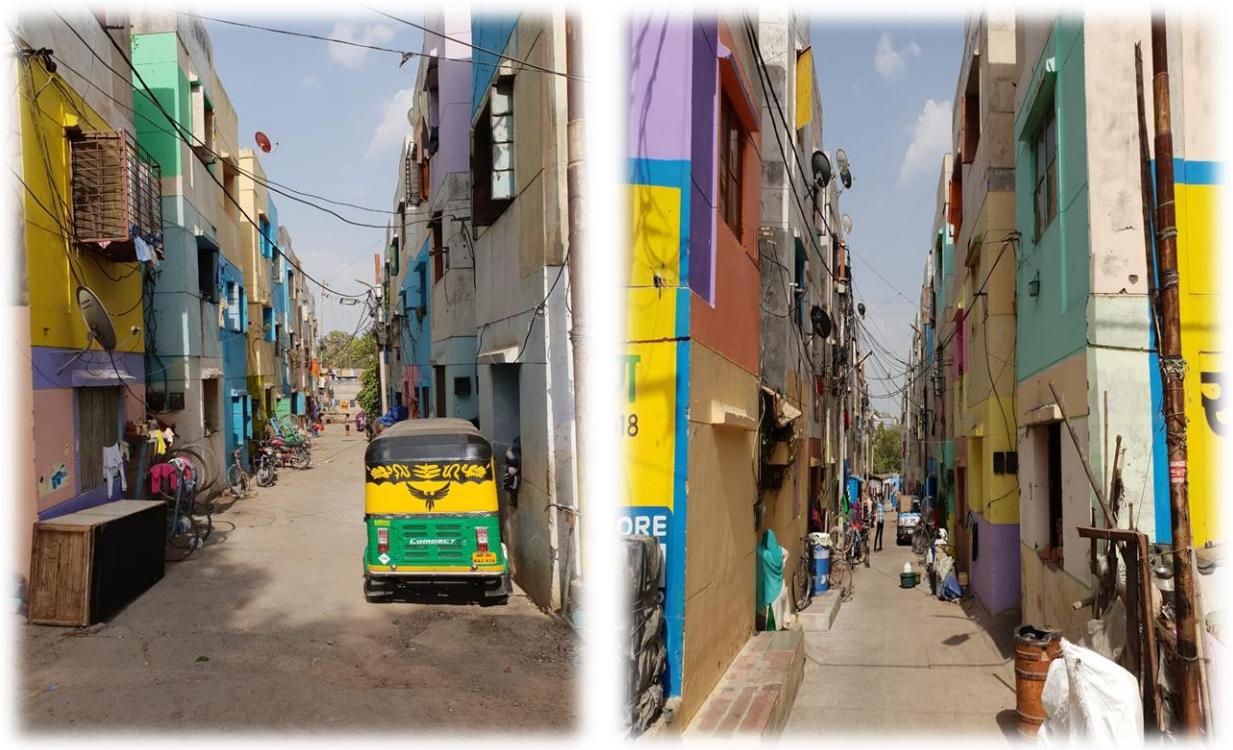
जरूरतमंद बच्चों को दाल-चावल वितरित करते शोधार्थी



सामाजिक कार्य गतिविधि हेतु एकत्रित शोधार्थीगण, बस्ती निवासरत महिलाएं एवं बच्चे



बस्ती की महिलाओं को चर्चा हेतु संगठित करते शोधार्थी



ललबाग क्षेत्र, महूनाका रोड स्थित मलिन बस्ती अर्जुनसिंहपुरा

निष्कर्ष -

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि मलिन बस्ती निवासी महिलाओं को बैंक और खाता संबंधी छोटी-छोटी जानकारियां नहीं थी, वे सरकार की वित्तीय योजनाओं से अनभिज्ञ थीं, जिसके कारण साहूकार एवं अन्य सूदखोर उनका शोषण करते हैं एवं जानकारी के अभाव में वे अन्य लाभों से भी वंचित रहते हैं। हमारा “वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम” काफी हद तक उन्हें विभिन्न वित्तीय एवं बैंक सम्बन्धी जानकारी देने में सफल रहा। जिन उद्देश्यों को लेकर यह सामाजिक सेवा कार्य संपादित किया गया उसे पूरा करने में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
समाज विज्ञान अध्ययनशाला
पीएच-डी. कोर्सवर्क, समाजशास्त्र
सत्र 2017-18

क्र.	अनुक्रमांक	शोधार्थी का नाम	हस्ताक्षर
1	1718442	ब्रजेन्द्र सिंह	<i>Singh</i>
2	1718443	छाया हाडिया	<i>Chaya Hadiya</i>
3	1718444	डॉ. शीला बनो	<i>Shilpa Banoo</i>
4	1718445	फराह कुरेशी	<i>Farah Kureshi</i>
5	1718446	गरिमा वाजिया	<i>Gurima Vajiyaa</i>
6	1718447	गोविन्द कुमार	<i>Gowind Kumar</i>
7	1718448	कोमल शुक्ला	<i>Komal Shukla</i>
8	1718449	मशरुफा माजिंद दार	<i>Mashraf Maajind Dar</i>
9	1718450	मो. राफ़े पारे	<i>Rafee Parai</i>
10	1718451	मुदिदसर लादिक	<i>Mudit Ladiq</i>
11	1718452	नरेन्द्र कुमार लिचारी	<i>Narendra Kumar Licari</i>
12	1718454	नीतु जलौदिया	<i>Neetu Jaloudiya</i>
13	1718455	निधो चौधेरी	<i>Nidho Chaudhary</i>
14	1718456	सज्जन सिंह मौर्य	<i>Sajjan Singh Mory</i>
15	1718457	समता शीवारताव	<i>Samata Shivaaratav</i>
16	1718458	सविता मिश्रा	<i>Savitra Mishra</i>
17	1718459	शाल्वर अहमद नट्ट	<i>Salwar Ahamed Natt</i>
18	1718460	शार्मिला दुबे	<i>Sharmila Dubey</i>
19	1718461	राधा लक्ष्मी लाङ्डोले	<i>Rada Lakshmi Langdole</i>
20	1718462	उषा यादव	<i>Usha Yadav</i>
21	1718464	उमा शंकर काठोलिया	<i>Uma Shankar Katoholiya</i>
22	1718465	वीना छिब्बर	<i>Vineeta Chibber</i>

पीएच-डी. कोर्स वर्क (समाजशास्त्र) के प्रतिभागी शोधार्थियों की अनुक्रमांक सह हस्ताक्षरित सूची

संधियवाद।

DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA,
INDORE



SCHOOL OF SOCIAL SCIENCE

Ph.D. COURSE WORK

(SUBJECT- MILITARY SCIENCE)

SESSION:2017-18

SOCIAL WELFARE PROJECT

'Winning Heart and Mind'

(A small initiative of Operation Sadhbhavna)

Introduction of social welfare project

On 20th of May, students of Ph.D. Military science of school of social science, Devi Ahilya Vishwavidyalaya has conducted motivating programme on ‘Winning Heart and Mind’ under Operation Sadbhavana among school students of Rajouri district of J&K region which is quiet affected with terrorism. Under this programme , firstly we have diagnose the main barrier which is affecting literacy rate in that area and also made aware of special reservation and various benefits for JAMMU & KASHMIR region people given by Government of India. The Army’s Sadbhavana drive is an informal approach mechanism for officers and soldiers to interact with and show genuine concern and interest in the welfare of the local population. With the deployment of army units in the early 1990s to combat insurgency in Kashmir , the Army northern command launched operation Sadbhavana in 1998 to extend helping hand in rebuilding the socio economic life of people.

Theme of social welfare project: ‘Winning Heart and Mind’.

Detailed description of work area: various government schools of rajouri district of J&K is undertaken in this project. Around 48 school students were motivated under this programme.

Aim of the project:

1. To motivate the young minds to wrest the initiative from the terrorists and to reintegrate the population with national mainstream.
2. It was envisaged that these developmental activities would provide the healing touch during conflict and win over the alienated sections of people in the conflict zone.
3. As a general principle, Sadbhavana activities were to be sustainable and based on popular demand. They were to be executed in time and it was hoped that such activities would also lead to empowering of the local people.
4. The main focus is to mitigate the hardship of common man by literacy and women empowerment.

Beneficiaries: 5000 higher secondary and secondary school students.

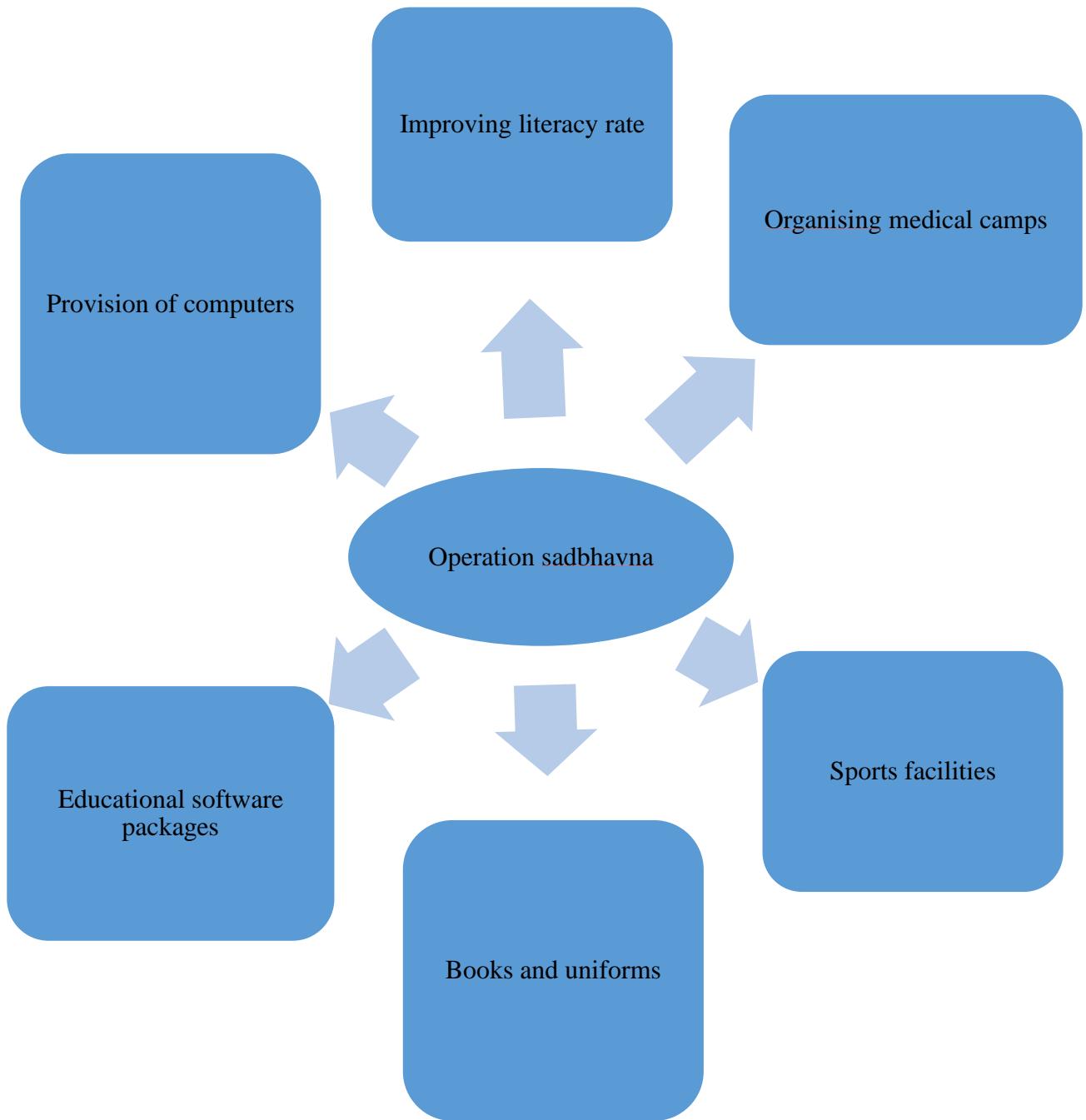
Participants : My self along with supporting team of Regular unit presently allocated at rajouri district of J&K region.

Activities undertaken during this project



Interacting with students of Nizam-u-din school,rajouri





Debate competition organized at Scholars School



CONCLUSION

¶

The Army's Sadbhavana drive is an informal approach mechanism for the officers and soldiers to interact with and show genuine concern and interest in the welfare of the local population. "Winning Hearts and Minds" (WHAM) activities have had an impact in influencing a hostile populace to a more neutral position. The concept emerged during the early years of the insurgency in the Northeast, when units deployed in those areas undertook small scale civic action programmes such as holding medical camps and providing basic goods in remote areas. The small gains soon started to manifest into bigger employment of resources by the Army as the protracted insurgency had led to a complete breakdown of government machinery and people were denied basic facilities in terms of health care and education. The Army's presence and assistance thus had a positive impact on the minds of the local population.

Education has been a prime intervention, with the Indian Army establishing about 55 modern English medium Goodwill Schools under the State Board and Central Board of Secondary

Education. These well endowed schools are heavily subscribed and at places hostel facilities have also been provided. Further the locals are employed as teachers and administrative staff which augur well for their family income. In an effort to reach out to the poor children, assistance has been provided to 2700 State Government Schools in terms of renovations, construction of additional class rooms, toilets, play grounds, sports facilities, provision of computers, educational soft ware packages, books, uniforms, libraries and laboratories. Subsidised education at nominal fees is provided to children of Gujjar and Bakarwal communities. Large number of children are also provided scholarships to study in public schools within and outside the state. In addition, Computer Literacy Centres have been established at number of places to educate children, youth and ladies to ensure they are able to attain the skill of operating computers. These Centres provide education in basic concepts, use of Windows Operating System and Internet.

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

समाज विज्ञान अध्ययनशाला



पीएच.डी. कोर्स वर्क (भूगोल)

(2017-18)

सामाजिक सेवा गतिविधि प्रतिवेदन

विषय- “वृक्षारोपण एवं पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रम”

निर्देशन

प्रो. रेखा आचार्य

विभागाध्यक्ष,

समाज विज्ञान अध्ययनशाला

प्रस्तुतिकर्ता

पीएच.डी. कोर्स वर्क(2017-18)

भूगोल विषय के शोधार्थीगण

सारांश-

वृक्षों का हमारे जीवन में सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक महत्त्व है. नगरीय क्षेत्रों में वृक्षों के हरित आवरण को शहरों के फेफड़ों की संज्ञा भी दी जाती है. वर्तमान में शहरी क्षेत्रों में वायु प्रदूषण की समस्या, गर्मी के मौसम में छायादार वृक्षों की आवश्यकता एवं भूमिगत जल के स्तर में कमी आदि समस्याओं से निपटने के लिए वृक्षारोपण एक महत्वपूर्ण उपाय हो सकता है. अतः सामूहिक समाजिक कार्य के अंतर्गत भूगोल विषय के शोधार्थियों द्वारा कमला नेहरु प्राणी उद्यान, इंदौर के परिसर में वृक्षारोपण का कार्य किया गया. प्रस्तुत सामाजिक कार्य के द्वारा प्राणी उद्यान परिसर में वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत पौधे लगाने के साथ-साथ उद्यान में आने वाले पर्यटकों के मध्य पर्यावरण जागरूकता सम्बंधित बातें बताई गयी एवं वृक्षों के महत्त्व को बताया गया, साथ ही लगाये गए पौधों के बचे रहने को सुनिश्चित करने हेतु लोगों को वृक्षों के महत्त्व के प्रति जागरूक किया गया.

उद्देश्य-

प्रस्तुत कार्यक्रम के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये गये-

1. कमला नेहरु प्राणी उद्यान में वृक्षारोपण कार्यक्रम का संपादन.
 2. प्राणी उद्यान में आये पर्यटकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना.
 3. लगाये गए पौधों के बचे रहने को सुनिश्चित करना.
 4. लोगों को वृक्षों के पर्यावरणीय महत्त्व के बारे में बताना.
-

विवरण-

स्थान- कमला नेहरु प्राणी उद्यान, इंदौर.

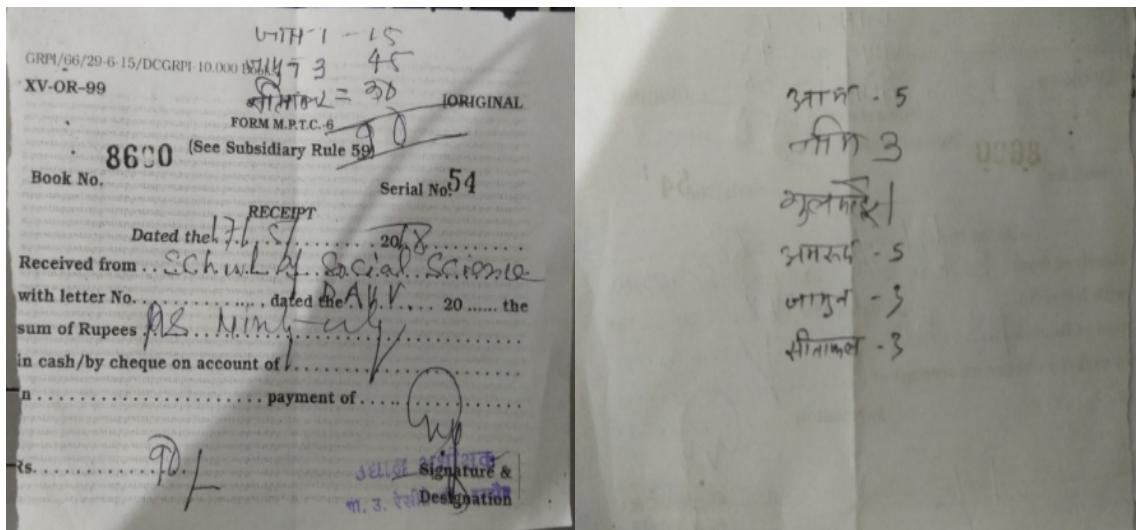
सहभागी-

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, समाज विज्ञान अध्ययनशाला में पीएच.डी. कोर्स वर्क में भूगोल विषय के शोधार्थी-

1. यतेन्द्र कुमार
2. अजय कुमार यादव
3. आकाश चौरसिया
4. देवेन्द्र कुमार स्वर्णकार
5. भावेश तिवारी
6. रहीश दांगी
7. दुर्गेश कुर्मी
8. मोहिनी जादौन
9. सुजीत कुमार चौहान
10. जाहिद नबी

समाज कार्य का विवरण –

1. वृक्षारोपण कार्य के लिए सर्वप्रथम उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा संचालित नर्सरी से पौधे प्राप्त किये गये। उद्यान अधीक्षक डॉ. त्रिवेदी ने वृक्षारोपण सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी दी। जैसे कि वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त समय, तापमान, मिट्टी आदि से सम्बंधित जानकारी।



2. रोपण हेतु पौधों का चयन इंदौर की जलवायु एवं यहां की प्राकृतिक दशाओं को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस लिए आम, नीम, अमरुद, जामुन, गुल मोहर, सीताफल आदि वृक्षों का चयन किया गया।



3. प्रस्तुत कार्य के लिए स्थान के रूप में कमला नेहरू प्राणी उद्यान, इंदौर का चयन किया गया। यहां के परिसर में वृक्षारोपण हेतु गेट न. 4 के समीप खाली पड़ी जमीन का चयन किया गया। इस कार्य में प्राणी उद्यान स्टाफ की सहायता ली गयी। आवश्यक उपकरण एवं जल आदि लोगो से ही लिए गये।



4. वृक्षारोपण के कार्य में पर्यटकों को भी शामिल किया गया एवं उनके द्वारा भी पौधे लगाये गये, साथ ही कुछ लोगों ने भविष्य में इस प्रकार से वृक्षारोपण का संकल्प भी किया.



5. लोगों को वृक्षों के पर्यावरणीय, सांस्कृतिक एवं सामजिक महत्त्व से अवगत कराया गया.



6. पौधों को किसी स्थान पर लगा देना ही पर्याप्त नहीं है. पौधे से वृक्ष बनाने में समय लगता है. इस दौरान, खासतौर से शहरी वातावरण में जहाँ पौधे के विकास हेतु उपयुक्त दशाये नहीं मिल पाती, उसे देखभाल की आवश्यकता होती है. अतः लगाये गए पौधों के विकास हेतु देखभाल के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया.



7. शोधार्थियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया, जिससे सम्बंधित कुछ फोटो संलग्न हैं।



8. भूगोल विषय के शोधार्थियों में से आकाश चौरसिया, रहीश दांगी द्वारा सागर में, सुजीत चौहान द्वारा रीवा में, भावेश तिवारी द्वारा जौनपुर में एवं जाहिद द्वारा जम्मू में वृक्षारोपण कार्य किया गया।



निष्कर्ष-

वर्तमान समय में जबकि वन क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियों के कारण न सिर्फ कमी आई है बल्कि वनों कि गुणवत्ता में भी निम्नीकरण हुआ है, परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, वैश्विक ऊष्मन, वतावरण में CO₂ के प्रतिशत में वृद्धि आदि समस्याए सामने आई हैं। अतः पर्यावरण संरक्षण के लिए वनों क्षेत्रों एवं वृक्षावरण का विस्तार आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 33% वनावरण करने का लक्ष्य रखा गया है। जिसकी प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के संरक्षण कार्यक्रम एवं प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त शहरी क्षेत्रों में जहाँ जनसंख्या संकेद्रण अत्यधिक होने के कारण एवं आर्थिक व औद्योगिक गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय समस्याए सामने आती हैं, अतः शहरों में खली पड़े स्थानों, सड़कों के किनारे एवं रिहायशी क्षेत्रों में वृक्षारोपण के माध्यम से वृक्षों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि स्थानीय लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जाये एवं वृक्षों के महत्व को बताया जाये। इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर पर एवं संस्थागत स्तर पर, सामुदायिक रूप से जागरूकता कार्यक्रम चलाये जाये।